HIN CC 409
GAban Upanyas
SEMESTER IV

Dr. Sushma Choubey
Asst. Professor
Department of Hindi
PWC

1.5 गबन उपन्यास के आधार पर रमानाथ का चरित्र चित्रण कीजिए ?

रमानाथ गबन उपन्यास का प्रमुख पुरूष पात्र है। उपन्यास का नायक होने के साथ-साथ वह वर्तमान युग के युवा वर्ग का प्रतिनिधि है। जिसके माध्यम से उपन्यासकार ने युवा वर्ग के चरित्र को चित्रित किया है। रमानाथ एक ऐसा नायक है जिसमें कुछ अच्छाई है तो कुछ मानव जनित सहज दुर्बलताएं भी हैं। आरंभ में यह पात्र एक दुर्बल व्यक्तित्व, आडंबर युक्त, झूठ से ओत-प्रोत, मिथ्या प्रदर्शन, फैशनपस्त एवं अहंकार से युक्त हमारे समक्ष आता है वह मुंशी दयानाथ के तीन पुत्रों में सबसे बड़ा पुत्र है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक है। जालपा उसकी पत्नी है जो उसके आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित है। स्वभाव से रमानाथ आलसी, दायित्वविहीन है। उसका ध्यान ठाठ-बाट, घूमने-फिरने की ओर अधिक है। दफ्तर में उसकी स्थिति चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी की है। बिंदुवार रमानाथ के चरित्र की विशेषता निम्नानुसार है।

1.5.1. अकर्मण्य और अवारा युवक

कथानक के प्रारंभ में रमानाथ एक अकर्मण्य और अवारा युवक के रूप में पाठकों के समक्ष आता है। उसे अच्छे व फैशनेबल परिधान पहनने का बेहद शौक है। अपने आत्मप्रदर्शन की तृप्ति के लिए वह मित्रों से वस्त्र व अन्य वस्तुएँ माँगकर अपनी अभिलाषा पूरी करता है। उसकी यही आडंबर प्रियता और विलसिता का शौक ही उसे जीवन में अनेक कष्टों में डाल देता है।

उसकी अकर्मण्यता से उसके पिता बेहद परेशान है। युवा पुत्र पिता का बाँया हाथ होता है। यही अपेक्षा मुंशी दयानाथ रमानाथ से रखते हैं कि युवा होकर वह अपना दायित्व बोध संभाले। किन्तु रमानाथ उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरता।

1.5.2. निर्बल चरित्र

रमानाथ का लापरवाहपूर्ण व्यक्तित्व उसके चरित्र को निर्बल बनाता है। बड़ा बेटा होने के नाते घर के प्रति उसकी कुछ जिम्मेदारियाँ हैं किन्तु अपने मिथ्या प्रदर्शन डींग हाँकने की प्रवृत्ति के चलते वह घर में अपने सम्मान को खो चुका है। यहाँ तक कि पत्नी द्वारा उसके विवाह करने के प्रस्ताव को भी दयानाथ यह कहकर ठुकरा देते हैं कि, ''जो आदमी अपने पेट की फ्रिक नहीं कर सकता, उसका विवाह करना मुझे तो अधर्म सा मालूम होता है।''

1.5.3 संकोची प्रवृत्ति

रमानाथ सदैव अपनी संतोषी प्रवृत्ति के कारण ही अनेक संकटों में पड़ता है। उसकी सबसे बड़ी कमजोरी ही यह है कि वह अपने मन की बात निकट से निकट व्यक्ति को भी नहीं बताता। यथा घर के आर्थिक हालात वह संकोचवश अपनी पत्नी जालपा से भी नहीं कहता इसी का परिणाम है कि वह गबन जैसी घटना को अंजाम दे बैठता है। यदि वह जालपा को घर के सही हालातों से अवगत करा देता तो यह स्थिति कभी न आती। न ही जालपा उससे गहनों की माँग करती। उसी तरह वह जज के सामने अपनी झूठी गवाही की बात कहने में संकोच करता है। जालपा द्वारा धैर्य बधांने पर कि जज के सामने पुलिस के हथकंड़ों का भण्डा फोड़ करें, अपनी झूठी गवाही की बात स्वीकारे, लेकिन अपनी संकोची प्रकृति के कारण वह चाहते हुए भी ऐसा नहीं कर पाता।

1.5.4 कायरता

रमानाथ स्वयं ही उलझनों को आमंत्रण देकर वह उनका सामना करने के बजाय उनके सामने घुटने टेक देता है। मुसीबतों से भागना उसका स्वभाव है। पहले वह जालपा के सामने घर के सच्चे हालात रखने से भागता है। फिर जालपा की खुशी के लिए गहनें उधार लेकर मुसीबत को न्यौता देता है, उससे बचने के लिए रतन के जेवर दाँव पर लगाता है, सरकारी पैसों का गबन करता है और इन हालातों का सामना करने के बजाय भागकर कलकत्ता चला जाता है। वहाँ पुलिस से बचने के चक्कर में वह झूठी गवाही दे बैठता है। तब जालपा उसकी कायरता पर उसे धिक्कारती है। इस तरह रमानाथ तमाम उम्र अपनी कायरता का शिकार बना रहा।

1.5.5 विलासोनमुखी

युवावस्था से रमानाथ सैर-सपाटे, खेल-कूद एवं फैशन परस्ती में ही लगा रहा, दोस्तों से उधार कपड़े लेकर पहनना, उनकी गाड़ी पी घूमना, लोगों पर इन विलासह वस्तुओं से अपना

झूठा रौब जमाना यह सब उसके स्वभाव में शामिल है। घर के दायित्वों के प्रति गैर जिम्मेदारी का भाव उसके पिता दयानाथ को बहुत खलता था। उसकी यही प्रवृत्ति उसकी बरबादी का कारण बनती है। जीवन के झंझावातों में उलझकर जब उसकी किस्मत उसे कलकत्ता ले गई वहाँ भी वह चाय की दुकान के चलते ही फिर उसी दिशा में बढ़ गया। जोहरा से उसका संबंध इसी कारण जुड़ता है। उसे जब भी अवसर मिलता वह विलासिता के समंदर में डूबकी लगाता रहता।

1.5.6 अनन्य प्रेमी

प्रत्येक व्यक्ति में जीवन की तमाम बुराइयों के साथ-साथ कुछ अच्छाइयाँ भी होती है। निःसंदेह रमानाथ संवेगी एवं कायर पुरूष है। मिथ्या आडंबर, आत्मप्रदर्शन उसकी कमजोरी है किन्तु वह अपने दाम्पत्य को लेकर सदैव गंभीर रहा। जालपा के प्रति अनुराग ही था जो वह सर्राफे से आभूषण उधार ले आया। वह जालपा से सच्चा प्रेम करता है इसलिए उसकी प्रत्येक इच्छा पूरी करना चाहता था। उसे दुखी नहीं देखना चाहता था। उसकी माँ ने कहा था कि गले में विवाह का जुँआ पड़ जाए तो सब ठीक हो जाएगा। जो एक बार तो रमानाथ के बारे में सच ही साबित होती है कि विवाह के पश्चात रमानाथ को दायित्वबोध होता है और वह नौकरी करता हे यद्यपि छोटे पद पर नौकरी करना उसे पसंद नहीं है किन्तु वह जालपा के लिए कुछ करना चाहता है उसे खुश रखना चाहता है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि रमानाथ कथानक का नायक अवश्य है परन्तु उसके व्यक्तित्व का कोई निजत्व नहीं है उसमें एक नायक के उज्जवल पक्ष को साबित करने के कोई गुण नहीं है। वह दुर्बल चरित्र का व्यक्ति है। उसका जीवन सदैव सत्-असत् के द्वंद में उलझा रहा है। वह परिस्थितियों से हारे हुए युवक के रूप में हमारे सामने आता है जो जीवन में कभी भी ठोस निर्णय नहीं ले पाता तथा निरंतर पतन के गर्त में गिरता चला जाता है। अंत में जीवन की सही दिशा हेतु उसे अपनी पत्नी जालपा का सहयोग लेना पड़ता है।

वस्तुतः रमानाथ तो एक प्रतीक है युवा समाज का उसके माध्यम से उपन्यासकार ने आम भारतीय युवा की वस्तुस्थिति को समाज के समक्ष रखा है। जैसे आज का युवा वर्ग फैशनपरस्ती और आधुनिकता की आड़ में गैर जिम्मेदाराना रवैया अपनाता है तथा मिथ्या आडंबर एवं आत्म प्रदर्शन का यह भाव उसे जिस तरह पतन की ओर ले जाता है। उससे पाठकों से परिचित कराना ही प्रेमचंद का उद्देश्य है।

1.6 जालपा कथानक की नायिका हैं सारी हलचल उसी के कारण होती है। उसके चरित्र की विशेषताएं निम्नानुसार है-

---

पात्र किसी भी कहानी और उपन्यास का प्रमुख अंग है, ये पात्र ही उस साहित्य को जीवंतता प्रदान करते हुए घटनाक्रम को आगे बढ़ाते हैं। ये पात्र स्त्री अथवा पुरूष दोनों हो सकते हैं। अपने चरित्र के आधार पर इसमें किसी एक पात्र की प्रधानता होती है और वही पात्र उपन्यास का नायक अथवा नायिका कहलाते हैं। क्योंकि सारे घटनाक्रम इसी पात्र के ईद-गिर्द चलते रहते हैं। कभी इसमें नायक अथवा नायिका का प्रभाव अधिक होने से यह उपन्यास नायक / नायिका प्रधान उपन्यास भी कहलाते हैं।

जालपा भी गबन के कथानक की नायिका है क्योंकि सारी कथा जालपा के ईद-गिर्द ही उत्पन्न होती है। जालपा जो दीनदयाल की इकलौती पुत्री है और मुंशी दयानाथ की पुत्रवधू तथा

रमानाथ की पत्नी है। उसका बचपन बड़े ही लाड़-प्यार से बीता, पिता उसकी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करते। जालपा में आभूषणों के प्रति चरमोत्कर्ष लालसा है। यही लालसा कथानक का आधार बनती है। परिस्थितियाँ उसके चारित्र में परिवर्तन लाती है और विभिन्न उतार-चढ़ाव से होते हुए उसका चरित्र त्याग और सेवा के बल उच्च आदर्श बन जाता है। जिस तरह आँच में तपकर सोना खरा होता है। जालपा का चरित्र भी विपरीत परिस्थितियों की आँच में तपकर ऊँचाइयाँ पाता है। डॉ. रामविलास शर्मा ने प्रेमचंद के साहित्य में जालपा का स्थान सुनिश्चित करते हुए कहा है -

'वह निर्मला की तरह घूम-घूमकर प्राण देने वाली राह पर कदम उठाने वाली नहीं है और न सुमन की तरह तैश में आकर जल्दी ही किसी अनजान राह पर कदम उठाने वाली। उसका चरित्र कठिनाइयों का सामना करते हुए बराबर निखरता रहा है। क्योंकि वह अपनी ख़ामियों को पहचान सकती है। वह एक ईमानदार और साहसिक स्त्री है।

जालपा के चारित्रिक विशेषताओं को हम निम्न शीर्षकों में विभाजित कर सकते हैं -

1.6.1.<u>आभूषणों के प्रति तीव्र लालसा</u> -

जालपा को बचपन से ही आभूषणों से बेहद लगाव था। उसका मनोवैज्ञानिक कारण है कि आरंभ से ही वह जिस वातावरण में पली बढ़ी वहाँ आभूषणों की ही चर्चा अधिक होती है। माँ उसे अक्सर आभूषण दिलवाती, विसाती से बिल्लौरी चंद्रहार दिलवा देती है उसे पाकर उसके आनंद की कोई सीमा नहीं रहती, सारे गाँव में वह इन गहनों को पहनकर घूमती रहती उसकी बाल संपत्ति भी यह आभूषण ही थे जिसमें वह बिल्लौरी चंद्रहार सबसे प्रिय था। जालपा की आभूषण प्रियता को प्रेमचंद्र कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं।

"..... जालपा आभूषणों से खेलती थी यही उसके खिलौने थे। वह बिल्लौर का हार जो उसने बिसाती से लिया था। अब उसका प्यारा खिलौना था। असली हार की अभिलाषा अभी उसके मन में उदय ही नहीं हुई थी। गाँव में कोई उत्सव होता या त्यौहार पड़ता तो वह उसी हार को पहनती थी। कोई दूसरा गहना उसकी आँखों जँचता ही नहीं।"

परन्तु विवाह पर आए आभूषणों में उसकी निगाह चंद्रहार को ही खोजती है और जब उसे चंद्रहार कहीं नजर नहीं आता, परिणाम स्वरूप झुंझलाहट से चिढ़कर वह दृढ़ निश्चय करती है, "जब मालूम हो गया कि चंद्रहार नहीं है तो उसके कलेजे पर चोट सी लग गई। मालूम हुआ देह में रक्त की एक बूंद भी नहीं है। मानो उसे मूर्छा आ जाएगी। वह उन्माद की सी दशा में अपने कमरे में आई और फूट-फूटकर रोने लगी।"

यद्यपि आभूषण के प्रति इतना प्रेम होना उचित नहीं, किन्तु प्रस्तुत उपन्यास में इसे प्रेमचंद ने सकारात्मकता की ओर मोड़ दिया जैसे - जालपा को आभूषण दिलाने हेतु रमानाथ का नौकरी करना।

1.6.2 <u>आत्म सम्मान की भावना</u>

जालपा में आत्म सम्मान और आत्म गौरव की बेहद ललक है। चंद्रहार न होना उसके लिए प्रतिष्ठा का विषय बन गया जिससे वह घर से बाहर नहीं निकलती, मुहल्ले में किसी से मेल-जोल नहीं रखती क्योंकि उसके पास आभूषण नहीं है। आभूषण अच्छे कपड़े मिलते ही वह

मुहल्ले की स्त्रियों की सिरमौर बन जाती है। इतना ही नहीं वह एडवोकेट इन्द्रभूषण की पत्नी रतन से मैत्री संबंध स्थापित करती है, उसे घर चाय पर निमंत्रित करती है।

आभूषण की लालसा होते हुए भी वह माता के द्वारा दिया चंद्रहार अस्वीकार कर लौटा देती है। सोचती है –

''अम्मा जी इसे खुशी से नहीं दे रही हैं। बहुत संभव है कि इसे भेजते समय वह रोई भी हो और इसमें कोई संदेह नहीं कि इसे वापस पाकर उन्हें सच्चा आनंद होगा। देने वाले का हृदय देखना चाहिए प्रेम से यदि वह मुझे एक छल्ला भी दे दें तो मैं दोनों हाथों से ले लूँगी , दान भिखारियों को दिया जाता है। मैं किसी का दान न लूंगी चाहे वह माता ही का क्यों न हो।''

इसके अतिरिक्त रमानाथ उधार आभूषण खरीदने की बात कहता है इस पर जालपा सगर्व उत्तर देते हुए कहती है –

''मैं वैश्या नहीं कि तुम्हें नोच–खसोट कर अपना रास्ता लूँ। मुझे तुम्हारे साथ जीना मरना है यदि मुझे सारी उम्र बे गहनों के रहना पड़े तो भी मैं कर्ज लेने को नहीं कहूँगी।''

उपरोक्त कथन जालपा के आत्मसम्मान व आत्मगौरव को प्रदर्शित करते हैं।

1.6.3 <u>आदर्श पत्नी</u>

आभूषण के प्रति जालपा का आग्रह इसलिए हुआ कि रमानाथ ने उसके सामने अपने बड़प्पन की डींगे मारी थी। घर के यथार्थ हालातों से वह अनभिज्ञ थी। उसने कभी नहीं चाहा कि उसका पति उसके लिए उधार गहने लाए। रमानाथ ने जो बड़प्पन का आवरण उस पर डाला था उसने ही जालपा के विवेक को ढक लिया था। सही परिस्थितियों से परिचित होकर वह पश्चाताप करती है और स्वयं को दोष देती है। यह उसके चरित्र की उज्जवलता है कि वह अपने आभूषणों को बेचकर गबन किया हुआ रूपया म्यूनिस्पैलिटी में जमा कर आती है, सर्राफा का ऋण भी चुका देती है। यहीं से उसके जीवन की नई यात्रा आरंभ होती है।

''आधी रात तक वह इन चीजों को उठा–उठाकर अलग रखती रही, मानो किसी यात्रा की तैयारी कर रही हो। हाँ! यह वास्तव में यात्रा ही थी। अंधेरे में उजले की, मिथ्या में सत्य की। मन में सोच रही थी। यदि आज ईश्वर की कृपा हुई और वह घर लौटकर आये तो वह इस तरह रहेगी कि थोड़े से थोड़े में भी निर्वाह हो जाय। एक पैसा भी व्यर्थ न खर्च करेगी। अपनी मजबूरी के ऊपर एक कौड़ी भी अपने घर न आने देगी। आज से उसके जीवन का प्रारंभ होगा।''

जालपा के चरित्र की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि वह अपने दोषों को स्वीकार करती है। रमानाथ के प्रति उसका यह कथन उसके आदर्श पत्नी स्वरूप को प्रकट करती है।

''इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं, सरासर मेरा दोष है। अगर मैं भली होती तो आज यह दिन क्यों आता, जो पुरूष तीस चालीस रूपये महीने का नौकर हो, उसकी स्त्री अगर दो चार रूपए खर्च करे, हजार दो हजार के गहने पहनने की नीयत रखे तो वह अपनी और उसकी तबाही का सामान तैयार कर रही है। अतः तुमने मुझे इतना धन लौलुप समझा तो कोई

अन्याय नहीं किया मगर एक बार जिस आग में जल चुकी उसमें फिर न कुदूंगी।'' जालपा रमानाथ से अटूट प्रेम करती है, उसके लिए परिस्थितियों से समझौता करने को तैयार है।

1.6.4 आदर्श भारतीय नारी

कलकत्ता में रमानाथ की गवाही से सजा पाने वालों में एक दिनेश भी था। जिसके घर में उसके अलावा देखभाल करने वाला कोई न था, जालपा रोज उसके घर जाती, उसके बच्चों की देखभाल करती और उन्हें सांत्वना देती। रमानाथ जब जालपा से मिलने का प्रयास करता है तो वह उससे मिलने से इंकार कर देती है। इसी बीच जब रमानाथ जोहरा को जालपा के पास भेजता है जो जोहरा जालपा की पवित्रता और सात्विकता से बहुत प्रभावित होती है फलतः अपना जीवन ही बदल लेती है।

अंत में जालपा के चरित्र की शक्ति के प्रभाव में आकर रमानाथ जज से सच्चा हाल कह डालता है। इसी प्रकार जालपा उन आदर्श भारतीय रमणियों में से एक है जिनके प्रभाव से अनेक व्यक्तियों का उद्धार होता हैं। यद्यपि जालपा के चरित्र में आरंभ में कुछ दुर्बलताएं लक्षित होती हैं फिर रमानाथ के चले जाने पर उसमें अचानक बदलाव आ जाता है मानो उसकी आन्तरिक शक्तियाँ ही जाग उठती है। वह एक आदर्श पत्नी के रूप में पति को सद्मार्ग पर प्रवृत्त करने वाली, निर्भीक नारी न्याय प्रिय पात्र के रूप में हमारे सामने आती है उसके चरित्र की यही सात्विकता जोहरा को प्रभावित करती है।

वह नहीं चाहती उसका पति झूठी गवाही देकर निर्दोष को फँसाये इसलिए वह पति के पापों का प्रायश्चित करने का संकल्प लेती है और रमानाथ को फटकारती है,

''अगर तुम सख्तियों और धमकियों से इतना दब सकते हो तो तुम कायर हो तुम्हें अपने को मनुष्य कहलाने का कोई अधिकार नहीं.... झूठी गवाही, झूठे मुकदमें बनाना और पाप का व्यापार करना ही तुम्हारे भाग्य में लिखा है जाओ शोक से जिन्दगी का सुख लूटो । ..... मैं औरत हूँ। अगर कोई धमकाकर मुझसे पाप कराना चाहे तो भले ही उसे न मार सकूँ अपनी गर्दन पर छुरी अवश्य चला दूँगी। क्या तुममें औरत के बराबर भी हिम्मत नहीं है ?''

जालपा के उपर्युक्त कथन उसके चरित्र की उदारता और महानता का परिचय देते हैं। जालपा के रूप में प्रेमचंद ने महान राष्ट्रीय नारी का आदर्श प्रस्तुत किया है। भारतीय नारी हर विपरीत परिस्थितियों में भी अपने व परिवार के चरित्र को लेकर काफी गंभीर रहती है। इतिहास गवाह है कि भारतीय नारी ने समय-समय पर न केवल परिवार बल्कि समाज और राष्ट्र का भी पथ प्रदर्शन किया है।

1.6. 5 बुद्धिमता, भावुक नारी

जालपा भावुक किन्तु बुद्धिवान नारी है। उसमें भाव प्रवणता का अतिरेक है। वह सच्चे हृदय से पति की सेवा करती है। रमानाथ की जेब से एक पत्र उसके हाथ आता है, जिससे वह सारी स्थिति समझ जाती है। इसके पश्चात जब रमानाथ उसे दिखाई नहीं पड़ता तो वह शांकित हो जाती है और उसकी खोज में म्यूनिस्पैलिटी पहुँचती है। वहाँ आभूषण बेचकर रूपया जमा करती सर्राफ का कर्जा भी चुका देती है। समस्त विषम परिस्थितियों का एक साहसिक नारी की तरह सामना करती हुई देखी जाती है। रमानाथ का पता लगाने के लिये वह जिस प्रक्रिया को

अपनाती है, उससे उसके बुद्धि कौशल का परिचय मिलता है वह शतरंज के खेल का नक्शा पुरस्कार हेतु प्रकाशित कराकर रमानाथ का पता लगा लेती है।

1.6.6 चरित्र का क्रमिक विकास और चरमोत्कर्ष

आरंभ में प्रेमचंद ने जालपा का परिचय एक आम भारतीय नारी के रूप में कराया फिर उसके चरित्र का क्रमिक विकास हुआ है। कलकत्ता की घटना उसके चरित्र को उत्कर्ष पर पहुँचाती है वहाँ खटिक देवीदीन जिसने उसके पति को आश्रय दिया था वह उसकी एहसानमंद थी इसलिए वह खटिक होकर भी उसके लिए ब्राह्मण के बराबर था। उसकी पत्नी जग्गो को वह माता के समान मानती है। अपने प्रयासों से वह रमानाथ को भी सही राह पर ले आती है। रमानाथ उसके त्याग और साधना से प्रभावित होकर कहता है :-

''तब वह प्यार करने की वस्तु थी। अब वह उपासना की वस्तु है।'' वहीं जौहरा भी जालपा की त्याग और सेवा से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाती।

''तुमने मुझे उस देवी से वरदान लेने को भेजा था जो ऊपर से तो फूल है पर भीतर से पत्थर, जो इतनी नाजुक होकर भी इतनी मजबूत है''

दिनेश की माँ भी जालपा के उपकारों की प्रशंसा करते हुए कहती हैं -

''हमें तो उन्होंने जीवनदान दिया। कोई आगे-पीछे न था। बच्चे दाने-दाने को तरसते थे। जबसे यहाँ आ गई हैं हमें कोई कष्ट नहीं। न जाने किस शुभ कर्म का हमें यह वरदान मिला है।''

जालपा के आदर्श चरित्र की झांकी उस समय सामने आती है, जब सफाई वकील उसका मलतब स्वीकार करते हुए कहता है -

''..... उसकी सरलता और सज्जनता ने एक वेश्या तक को भी मुग्ध कर लिया और वह उसके बहकाने के बदले उसके मार्ग का दीपक बना गई। जालपा देवी की कर्त्तव्य परायणता क्या दंड के योग है...? जालपा ही ड्रामें की नायिका है। ..... आज वह रंगमंच पर आती तो पन्द्रह परिवारों के चिराग गुल हो जाते। उसने पन्द्रह परिवारों को अभ्यदान दिया है। ..... एक साधारण स्त्री जिसने उच्च कोटि की शिक्षा नहीं पाई, क्या इतनी निष्ठा, इतना त्याग, इतना विमर्श किसी दैवी प्रेरणा का परिचायक नहीं है ...?''

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि जालपा उपन्यास की प्रमुख नायिका है। संपूर्ण कथानक उसी को केन्द्र बनाकर रखा गया है। डॉ. राम विलास शर्मा ने जालपा के व्यक्तित्व को कुछ इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है -

''जालपा भारत का उगता हुआ नारीत्व है। वह भविष्य के तूफानों की अग्र सूचना है। उसने वर्तमान की राह पर मजबूती से पाँव रखा है और भविष्य की ओर निःशंक दृष्टि से देखती है। वह एक नई आग है जो झूठी संस्कृति के कागजी फूलों को भस्म कर देती है। वह सदियों के लांछन और आपमान को पहचानने वाली नई शूरता है जिसके आगे कोई बाधा ठहर नहीं सकती। वह हिन्दुस्तान के नये आने वाले इतिहास की भूमिका और इतिहास है जिसमें लाखों जालपा एक साथ बढ़ेगी और ऐसे नारीत्व का चित्र आंकेगी जिसके सामने अतीत के सभी चित्र फीके लगेंगे।

उसका जीवन बदल जाता है। इस प्रकार लेखक ने यह दिखाया है कि उपयुक्त वातावरण और अनुकूल परिस्थितियों के होने पर वेश्याओं का जीवन भी सुधर सकता है।

1.10 भाषा–शिल्प

प्रेमचन्द की भाषा का अध्ययन करते समय आप इस बात का स्मरण रखें कि वह सर्वप्रथम उर्दू में लिखते थे। हिन्दी में लेखन–कार्य उन्होंने बाद में आरम्भ किया और यह तथ्य उनकी भाषा के स्वरूप के सम्बन्ध में निश्चित जानकारी देता है। प्रेमचन्द भाषा की आत्मा को पहचानते हैं इसलिए हिन्दी लेखन में प्रेमचन्द ने उन्हीं उर्दू शब्दों को ग्रहण किया है जो हिन्दी प्रकृति के अनुकूल हैं, जो भाषा में प्रवाह और व्यंजकता लाने में समर्थ हैं। प्रेमचन्द की भाषा का स्वरूप क्रमशः विकसित होता गया है। आप देखेगें कि उनकी आरम्भिक कृतियों में भाषागत शिथिलता, वाक्य समूह की असम्बद्धता आदि पायी जाती है। शैली का प्रवाह या क्रम टूट जाता है। किन्तु धीरे–धीरे भाषा में प्रौढ़ता, व्यंजकता और प्रवाह आता गया है। प्रेमचन्द की भाषा का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य यह है कि वह जनमानस का स्पर्श करती चलती है, वह सरल और सहज है। जनभाषा को कलात्मक अभिव्यक्ति का साधन बनाकर प्रेमचन्द ने कथा साहित्य को नयी देन दी है। आचार्य शुक्ल के शब्दों में ''प्रेमचन्द की सी चलती और पात्रों के अनुरूप रंग बदलने वाली भाषा भी कहीं नहीं देखी गयी थी''। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रेमचन्द को शब्द चयन में उदारता बरतनी पड़ी हैं हिन्दी शब्द –भण्डार में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी, चार प्रकार के शब्द पाये जाते हैं। तत्सम संस्कृत मूल के शब्द हैं, जो हिन्दी में अपने मूल रूप में ही प्रयुक्त होते है। उदाहरणार्थ सत्य, कर्म, अग्नि आदि। संस्कृत से आये, किन्तु बदले रूप में प्रयुक्त शब्द तद्भव कहलाते हैं, जैसे सच, काम आग। स्थान विशेष की सांस्कृति परम्परा में जन्म लेने वाले शब्द देशज कहे जाते हैं, जैसे गाड़ी आदि ? इनके अतिरिक्त हिन्दी में फारसी, अंग्रेजी आदि विजातीय भाषाओं के शब्दों की संख्या भी कम नहीं है। आप प्रेमचन्द में तद्भव शब्दों की बहुलता पायेंगे; वैसे उन्होंने सभी प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। 'गबन' का अध्ययन करते समय आपने सवयं देखा कि जो बात लेखक ने स्वयं कही है, उसमें तत्सम शब्दों बाहुल्य है। जैसे –जालपा के लिए इन चीजों में लेशमात्र भी आकर्षण न था। 'हाँ वह वर को एक आँख देखना चाहती थी, वह भी सबसे छिपाकर। द्वारचार के समय उसकी सखियां उसे छत पर खींच ले गयीं और उसने रमानाथ को देखा। उसका सारा विराग, सारी उदासीनता मानो छूमन्तर हो गयी। मुँह पर हर्ष की लालिमा छा गयी। अनुराग स्फूर्ति का भण्डार है।''

जहां पात्रों के संवाद हैं वहां पात्रानुरूप तद्भव, देशज, विदेशी शब्दों का प्रयोग अधिक मिलेगा। उदाहरण के लिए आप निम्नलिखित पांक्तियों को देख सकते हैं – 'रमा ने प्रसन्नचित्त बनने के चेष्टा करके कहा – अब आपके हाथ में हूँ, रियासत कीजिए या सख्ती कीजिए। इलाहाबाद की म्यूनिसिपेलिटी में नौकर था। हिमाकत कहिए या बदनसीबी, चुँगी के चार सौ रुपये मुझसे खर्च हो गये।''

उर्दू, फारसी आदि भाषाओं के शब्दों के प्रयोग भाषा में चुस्ती लाने और प्रवाह एवं व्यंजकता बढ़ाने की दृष्टि से किये गये हैं या फिर संवाद का पात्रानुकूल रखने के लिए, उदाहरणार्थ आपने 'गबन' से एक मुसलमान सिपाही को कहते सुना –''एक मुलजिम को शुबहे पर गिरफ्तार किया है। इलाहाबाद का रहने वाला है, नाम है रमानाथ। पहले नाम और सकून दोनों गलत बतलायी थी।''

भाषा को सरल और सजीव बनाकर उसे जनजीवन के निकट पहुंचाने में मुहावरे और लोकोक्तियां प्रायः बहुत सहायक सिद्ध होती हैं। प्रेमचन्द इस काम में सिद्धहस्त हैं। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण जीवन के भीतर प्रवेश कर वे मुहावरों का चयन कर लेते हैं और उन्हें देवीदीन जैसे निपट देहाती व्यक्ति में मुँह से अत्यन्त स्वाभाविकता से कहलाते हैं – ''सिपाही क्या पकड़ लेगा, दिल्लगी है ! मुझ से कहो, मैं प्रयागराज के थाने में जाकर खड़ा कर दूं। अगर कोई तिरछी आंखें से भी देख ले तो मूंछ मुंड़ा डालूँ।'' यह सहज भारतीय उक्ति है।

प्रेमचन्द जी ने छोटे और लम्बे दोनों प्रकार के वाक्यों की योजना की है। आरम्भ में उनकी वाक्य–योजना इतनी संगठित और चुस्त नहीं होती थी; वाक्य लड़खड़ा जाते सिद्ध किन्तु 'गबन' में उसकी वाक्य–रचना का अपेक्षाकृत सफल रूप देखने को मिलता है। गंभीर विषयों के अनुरूप प्रेमचन्द लम्बे वाक्य अवश्य रखते हैं किन्तु उनकी कला का सच्चा निखार छोटे–छोटे वाक्यों की छटा मिलेगी–''जवानी की बात है, जब इस बुढ़िया पर जोबन था। मैं डाकिया था। मनीआर्डर तकसीम किया करता था। यह कानों के झुमके के लिए जान खा रही थी, कहती थी सोने के ही लूँगी। इसका बाप चौधरी था। मेवे की दुकान थी। मिजाज बढ़ा हुआ था। मुझ पर प्रेम का नशा छाया हुइा था।''

प्रेमचन्द ने भाषा की सहजता का ध्यान रखते हुए उसमें अवसरानुकूल उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकारों का भी प्रयोग किया है। उनका मन गांवों के अंचल में इतना रमा था कि उन्होंने उपमानों का चयन भी वहां के परिचित दृश्यों से ही किया है। प्रेमचन्द के सम्पूर्ण भाषा–विज्ञान में आपको वैयक्तिकता के स्थान पर सामाजिक दृष्टि मिलेगी भाषा की दृष्टि से 'गबन' प्रेमचन्द की प्रतिनिधि रचना के रचना में स्वीकृत है। इसलिए कि 'गबन' में सरसता, माधुर्य व्यंजना, चुस्ती, उदार शब्द–योजना आदि सभी विशेषताओं के दर्शन हो जाते हैं।

शिल्प का दूसरा पक्ष शैली है। 'स्टाइल इज दी मैन (Style is the man himself), यानी शैली स्वयं व्यक्ति का ही मुखर रूप है। शैली में भाषा की अपेक्षा कहीं अधिक वैयक्तिक पुट होता है। इस दृष्टि से प्रेमचन्द अत्यन्त समर्थ शैलीकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। प्रेमचन्द विशेष वातावरण में उपन्यास का आरम्भ करते हैं, परिस्थिति की क्रिया–प्रतिक्रिया से कथानक को आगे बढ़ाते हैं, कथानक के साथ–साथ चरित्र भी विकसित होते चलते हैं। इस क्षेत्र में भी प्रेमचनद की शैली निरन्तर परिष्कृत होती रही है। कथावस्तु का शैथिल्य और बिखराब जो आरम्भिक कृतियों में मिलता है, वह धीरे–धीरे समाप्त होता गया है और 'गबन' तो इस दृष्टि से नितांत सफल रचना है। जनसामान्य के परिचित उपकरणों का प्रयोग करने के कारण उसमें कोई झटका लगने वाली घटना समाविष्ट नहीं हुई है, कोई रहस्यमय उलझन नहीं है। वह हमारे अनुभव की वस्तु है। उनकी वास्तु विन्यास प्रणाली को ''अलौकिक रंजन शक्ति–समपन्न'' कहा गया है। वातावरण सजीव है और विकास में संगति है। प्रेमचन्द स्वयं यह मानते थे कि कथावस्तु में घटना वैचित्र्य तभी तक वाँछनीय है जब तक वह घटना वस्तु के मूल ढांचे का अभिन्न अंग बनी रहे है। इस विवेचना से स्पष्ट है किग 'गबन' हमारे सामाजिक और यथार्थ जीवन के सन्निकट है।

प्रेमचन्द उपन्यास को 'मानव–चरित्र का चित्र मात्र' समझते थे। इसलिये उनकी कला का पूरा निखार चरित्रांकन शैली में देखने को मिलता है। 'गबन' चरित्रांकन की दृष्टि से बहुत सफल उपन्यास है, जिसे पढ़ने के बाद ही सम्भवतः शुक्ल जी ने पात्रों की व्यक्तिगत स्वाभाविक विशेषताओं की प्रशंसा की थी। प्रेमचन्द की चरित्रांकन शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने पात्रों को धीरे–धीरे हमारे समीप लाते हैं, क्रमशः उनके मनो रहस्य खोलते चलते हैं,

कल्पना का सहारा लेते हैं किन्तु सत्य का आधार नहीं छुटता। इसलिए उनके पात्र जाने पहचाने लगते हैं। चरित्रांकन में मनोवैज्ञानिक शैली का आश्रय लेते हुए भी समाज की आँखों से ओझल नहीं करते, इसलिए पात्र 'व्यक्ति' होते हुए भी अपने वर्ग के प्रतिनिधि हैं। अपना दृष्टिकोण परखते हुए पात्रों का विकास अस्वाभाविक नहीं होने देते। 'गबन' में जालपा रमा, जोहरा सभी गतिशील चरित्र हैं। आचार्य शुक्ल ने लिखा है 'अन्तःप्रकृति या शील के उत्तरोत्तर उद्घाटन का कौशल भी प्रेमचन्द के दो एक उपन्यासों, विशेषतः 'गबन' में देखने में आया।'' इन चरित्रों के विकास एवं उद्घाटन के लिए प्रेमचन्द जी ने वार्तालाप का भी सफल प्रयाग कराया है, जिसके उदाहरण आप 'गबन' में रमानाथ और जालपा के वार्तालाप (परि0 21, पृष्ठ 88) और देवीदीन के कथन (परि0 34, पृष्ठ 140) में देखेंगे।

प्रेमचन्द की शैली में एक अद्भूत प्रवाह है, जो रस की अनुभूति में सहायक होता है। अनावश्यक को छोड़ देने और आवश्यक को ढूँढ़ लाने की शक्ति, प्रेमचन्द में मिलेगी। उनकी शैली समतल है; उसमें आवश्यक उतार चढ़ाव हर्नी है और यही कारण है कि वह जनमानस को छूती है किन्तु भावपूर्ण स्थलों में संक्षेप के साथ प्रभावोत्पादकता और कवित्व आ जाता है। ''लोहित आकाश पर कालिमा का पर्दा पड़ गया था। उसी वक्त रतन के जीवन पर मृत्यु ने पर्दा डाल दिया।''

''रमानाथ वैद्य जी को लेकर पहर रात को लौटे तो यहाँ मौत का सन्नाटा छाया हुआ था। रतन की मृत्यु का शोक वह शोक न था, जिसमें आदमी हाय-हाय करता है, बल्कि वह शोक जिसमें हम मूक रुदन करते हैं, जिसकी याद कभी नहीं भूलती, जिसका बोझ दिल से कभी नहीं उतरता।''

गहरे उतरकर वस्तुओं, भावों और परिस्थितियों को देखने की उनमें महान शक्ति थी। 'गबन' को पढ़ते हुए आपने भी यह अनुभव किया होगा कि वे जवीन के जिस पक्ष की भी वर्णन करते हैं, उसका चित्र उपस्थित कर देते हैं। जीवन के कोमल, मधुर, करुण, कठोर जिस पक्ष को भी प्रेमचन्द की लेखनी छू देती है, वही उपन्यास में आकर धारण कर लेता हैं हमारी इन्द्रियों और हमारा मन उसका प्रत्यख अनुभव करते हैं। अमूर्त भावों को मूर्त रूप में प्रस्तुत कर संवेद्य बना देना, स्थूल घटनाओं का संचय कर उनमें प्राण डाल देना कलाकारों की बहु बड़ी सुलता हैं प्रेमचन्द इसमें सिद्धहस्त हैं। रमा की मनः स्थिति का चित्र देखिये --''रमा की दशा इस समय उस शिकारी की सी थी जो हिनी को अपने शावकां के साथ किलोल करते देखकर तनी हुई बंदूक कन्धे पर रख लेता है, और वात्सल्य और प्रेम की क्रीड़ा देखने में तल्लीन हो जाता है।''

उनकी शैली भावों का अनुगमन करती चलती है और 'उसमें व्यंग का भी अच्छा पुट रहता है; जन-जीवन के धुल-पचे अनुभव के कारण कहीं-कहीं मनोरम सूक्तियाँ भी मिलती हैं। जैसे -'अनुराग स्फूर्ति का भण्डार है।' द्वेष तर्क और प्रमाण नहीं सुनता।' 'प्रेम अपने उच्चतम स्थान पर पहुँच कर देवत्व से मिल जाता है' इत्यादि। इस प्रकार 'गबन' उपन्यास शिल्प की दृष्ट से प्रेमचन्द की प्रतिनिधि एवं सफल रचना है। उसमें कथा वस्तु का सुगठन, चरित्रों का स्वाभाविक विकसा, परिस्थति और वातावरण का सजीव चित्रण, चुस्त वार्तालाप, सहज-सरल भाषा, परिचित मुहावारों और लोकोक्तियों का प्रयोग और शैली का अबाध प्रवाह सभी कुछ मिलता है।

1.3 गबन एक समस्यात्मक उपन्यास है ?

कोई भी साहित्यकार अपने युग की समस्याओं से अछूता नहीं रह सकता। प्रेमचंद भी ऐसे ही साहित्यकार रहे हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में समकालीन समाज के विभिन्न वर्गो की समस्याओं का चित्रण किया है। हम कह सकते हैं कि हिन्दी उपन्यास को प्रेमचंद का यह सबसे बड़ा योगदान है कि उस युग में जहाँ उपन्यास महज हल्के फुलके मनोरंजन के साधन के रूप में देखा जाता था उसे यथार्थ जीवन से जोड़कर इस विधा को एक गंभीर विधा का रूप प्रदान किया। सेवा सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, गोदान, निर्मला, गबन आदि ऐसे उपन्यास हैं। जिनमें उस युग की सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक नारी मनोविज्ञान संबंधी समस्या का प्रतिबिंब

देखने को मिलता है। इन उपन्यासों में जीवन का यथार्थ चित्रण पाकर ही ये पाठकों के बीच इतने प्रभावशाली हुए हैं।

गबन भी प्रेमचंद का ऐसा ही समस्यात्मक उपन्यास है जिसमें समाज के निम्न मध्यम वर्ग की समस्याओं का चित्रण देखने को मिलता है। आर्थिक विषमता सदैव ही समाज की समस्या रही है। हर युग में समाज दो वर्गो में बंटा रहा है। एक वर्ग जो सुविधा संपन्न है वहीं दूसरा वर्ग इन सुविधाओं से उतना ही दूर है। प्रेमचंद की सहानुभूति सदैव इस शोषित वर्ग के साथ रही है। उन्होंने इस निम्न मध्यम वर्ग की समस्याओं जैसे, कुंठित कामनाएं, झूठा दिखावा, उधार लेने की प्रवृत्ति, युवा वर्ग की समस्याएं आदि। चूँकि गबन भी निम्न मध्यम वर्गीय परिवार पर आधारित उपन्यास है अतः जाहिर है कि इस वर्ग के जीवन से जुड़ी सभी समस्याओं को उन्होंने बड़ी ही सजीवता के साथ उभारा है। गबन में निहित प्रमुख समस्याएं इस प्रकार हैं।

1.3 1 आभूषण प्रेम

गहनों के प्रति स्त्रियों का विशेष प्रेम होता है। जब यह प्रेम अत्यधिक हो जाता है और उसकी पूर्ति न होने पर व्यक्ति कामनापूर्ति के अनन्य साधन प्रयोग करता है और इस तरह जाने-अनजाने कई समस्याओं को आमंत्रण दे बैठता है। स्त्रियों के इसी आभूषण प्रेम पर चिंतन व्यक्त करते हुए प्रेमचंद जी कहते हैं - ''गहनों का मर्ज इस गरीब देश में जाने कैसे फैल गया, जिन लोगों को भोजन का ठिकाना नहीं वे भी गहनों के पीछे प्राण देते हैं। हर साल अरबों रूपए सिर्फ सोना-चांदी खरीदने में व्यय हो जाता है। संसार के किसी भी देश में इन धातुओं की इतनी खपत नहीं है इससे उन्नति तथा उपकार की जो महान शक्तियाँ हैं, उन दोनों का अंत हो जाता है। बस यही समझ लो कि जिस देश के लोग जितने ही मूर्ख होंगे वहाँ जेवरों का प्रचार भी उतना ही होगा। ..... जो धन भोजन में खर्च होना चाहिए बाल बच्चों का पेट काटकर गहनों की भेंट कर दिया जाता है बच्चों को दूध न मिले न सही। ..... मैं तो कहता हूँ यह गुलामी पराधीनता से कही बढ़कर है।''

जालपा भी गबन की ऐसी ही पात्र है जिसे गहनों से अत्यधिक लगाव है। विवाह में ससुराल से चंद्रहार नहीं दिया गया तो उसके जीवन में गहरी निराशा छा गई। यहाँ तक कि वह अपनी ही माँ से ईर्ष्या करने लगी। उसने तय कर लिया कि यदि उसे चंद्रहार नहीं मिला तो वह कोई और गहना तन पर धारण नहीं करेगी। किन्तु जब दफ्तर के रूपयों की क्षतिपूर्ति के लिए रमानाथ उसके वही गहने चुरा लेता है तो वह शोक में डूब जाती है।

स्त्रियों का गहनों के प्रति लगाव स्वाभाविक है किन्तु जब वह उन गहनों को ही समाज में अपनी प्रतिष्ठा का पैमाना मान लेती है तो यह गंभीर समस्या का भय धारण कर लेती है जालपा का विवाह में चंद्रहार न आना, उस पर गहनों का चोरी हो जाना उसके लिए चिंता का विषय होना स्वभाविक था किन्तु उन गहनों के बिना कमरे से बाहर न निकलना, यह सोचना कि बिना गहनों के घर से बाहर निकलने पर लोग अपमान की दृष्टि से देखेंगे एक समस्यात्मक प्रश्न है इससे पति-पत्नी के संबंधों में भी दरार आ जाती है। जिससे रमानाथ नौकरी कर पत्नी के लिए आभूषण बनवाने का निर्णय लेता है और इसी नौकरी के कारण उसके जीवन में काफी उतार-चढ़ाव आते हैं और उपन्यास का घटनाक्रम आगे बढ़ता है।

1.3.2 प्रदर्शन या मिथ्या आत्म सम्मान -

आभूषण प्रेम से जुड़ी समस्या है प्रदर्शन और मिथ्या आत्मसम्मान की। वर्तमान में भी यह समस्या समाज की अहं समस्या बनी हुई है कि मध्यम वर्ग का व्यक्ति उच्चवर्ग के व्यक्ति से तुलना करता है तथा वह सब सुख-सुविधाएं पाना चाहता है जो उच्च वर्ग के पास है। इस प्रयास में वह अपनी असलियत छिपा कर झूठा प्रदर्शन करने से भी नहीं हिचकता जालपा के आभूषण प्रेम के पीछे भी यही प्रदर्शन एवं मिथ्या आत्मसम्मान का भाव था। जिसके कारण वह न तो उपलब्ध आभूषणों का उपभोग ही कर पाई न ही अपने यथार्थ जीवन से सही तालमेल ही बैठा पाई। वह आधा तीतर आधा बटेर बनकर रह जाती है।

आज यह समस्या मध्यम वर्ग की सबसे व्यापक समस्या है। रमेश बाबू, रामनाथ, दयानाथ आदि सभी इस समस्या से ग्रस्त है और दोहरा जीवन जी रहे हैं। वास्तव में वे कुछ और है दिखावे में कुछ ओर हैं और यह दिखावा कभी भी अंत तक नहीं रहता, कभी न कभी नाटक का परदा गिरता ही है और ऐसे समय में व्यक्ति की जो स्थिति बनती है वह अपने आप में एक समस्या है।

1.3.3 रिश्वत की समस्या

आज अधिकांश व्यक्ति अपनी चादर से लंबे पैर पसारे हुए हैं। अपनी अनंत, कामनाएं जिन्हें किसी भी कीमत पर पा लेने की इच्छा उसे अनैतिक रास्तों की ओर ले जाती है जिनमें एक है रिश्वत, रिश्वतखोरी की बीमारी आज देश की एक अहं समस्या है। जब व्यक्ति देखता है कि उसका खर्च आमदनी से कहीं बढ़कर है। तो वह रिश्वत लेने का प्रयास करता है। आम धारणा है कि सरकारी नौकरों का रिश्वत लेने का बड़ा कारण उनकी आमदनी का कम होना है। उन्हें अपने जीवन निर्वाह के लिए रिश्वत लेना जरूरी हो जाता है।

किन्तु इस संबंध में प्रेमचंदजी का मत है कि व्यक्ति अपने खर्च पर नियंत्रण न होने से रिश्वत लेता है रमानाथ और दयानाथ इसका एक सकारात्मक पहलू है, जिन्होंने जीवन में कभी रिश्वत नहीं ली और सीमित साधनों में ही आने परिवार का पालन किया। वहीं रमानाथ का प्रयास है कि वह अधिक से अधिक रिश्वत ले ताकि वह अपने शौक को पूरा कर सके, पत्नी के लिए गहने बनवा सके। मगर रिश्वत के पैसों से कब किसका भला हुआ हैं यही पैसा आगे जाकर समस्या बन जाता है। आज संपूर्ण देश में रिश्वत का महारोग अपनी जड़ें जमाएं बैठा है, युवा- वयस्क सभी आधुनिकता की दौड़ में आधुनिक होने, भौतिक संसाधन जुटाने की होड़ में रिश्वतखोरी के शिकार हो रहे हैं। जो आगामी भारत के लिए नैतिक संकट उत्पन्न कर रहा है।

1.3.4 विधवा जीवन की विसंगति की समस्या

भारत में आज भी स्त्रियों की स्थिति उतनी बेहतर नहीं है फिर उस दौर में जहाँ स्त्री शिक्षा का अभाव था, ऐसे में पति के रहते तो स्त्री कुछ न कुछ सम्मान की अधिकारी होती ही थी, साथ ही उसे अपने भरण पोषण की समस्या भी नहीं रहती। किन्तु वहीं पति के न रहने पर उसका जीवन दुरूह हो जाता है। इतना ही नहीं सिर पर किसी पुरूष का साया न होने से समाज की कुदृष्टि भी उसका जीना मुश्किल कर देती है। पति के न रहने पर स्वयं के भरण-पोषण के लिए भी उसे परिवार का मुँह तकना पड़ता है। यदि उसका कोई पुत्र नहीं है तो उसकी स्थिति और भी निस्सहाय हो जाती है परिवार के सदस्य उसकी संपत्ति को येन-केन अधिकृत कर उसे घुट-घुटकर जीने के लिए छोड़ देते हैं।

गबन में रतन भी ऐसी ही भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। जिसे यह आघात सहना पड़ता है वकील साहब की मुत्यु के पश्चात् जब इस समस्या से उसका साक्षात्कार होता है तो उसकी करूण गाथा पढ़कर मन द्रवित हो जाता है। जिस रतन को पति के रहते आभूषणों और मंहगे वस्त्रों नौकर–चाकरों की कमी नहीं थी वही रतन अब वकील साहब के न रहने पर उनके भतीजों द्वारा संपत्ति से वंचित कर दी जाती है। जिसके विरोध में स्वयं रतन उद्वेलित हो कहती है ।

''न जाने किस पापी ने यह कानून बनाया था कि स्त्री का पति की संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं। अगर ईश्वर कहीं है और उसके यहाँ कोई न्याय होता है तो एक दिन उसी के सामने उस पापी से पूछूंगी – 'क्या तेरे घर में माताएँ, बहनें न थी ? तुम्हें उनका अपमान करते लज्जा न आयी ?' अगर मेरी जुबान में इतनी ताकत होती कि सारे देश में उसकी आवाज पहुँचती, तो मैं सब स्त्रियों से कहती – 'बहनों किसी सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना और अगर करना तो जब तक अपना घर अलग न बना तो चैन की नींद मत सोना .... अगर तुम्हारे पुरूष ने कुछ छोड़ा है तो अकेली रहकर भोग सकती हो, परिवार में रहकर तुम्हें उससे हाथ धोना पड़ेगा। परिवार तुम्हारे लिए फूलों की सेज नहीं काँटों की शय्या है, तुम्हारी पार लगाने वाली नौका नहीं निगल जाने वाला जन्तु है–

दुर्भाय ! आज भी समाज में रतन जैसी जाने कितनी ही निःसंतान विधवाएं है जिनका जीवन विसंगतियों से जूझने को विवश है। पति के न रहने पर या तो वे अपशकुनि करार दे दी जाती हैं या फिर समाज की ठोकरें खाने क`लिए अकेली छोड़ दी जाती हैं।

1.3.4 अनमेल विवाह

भारत की बड़ी समस्या है बेमेल विवाह, अक्सर निर्धन परिवार की बेटियाँ इसका शिकार होती हैं। शिक्षा का अभाव तथा आर्थिक असमर्थता में माता–पिता अपनी बेटियों को उनसे उम्र में काफी बड़े व्यक्ति से ब्याह अपने दायित्व की इतिश्री कर देते हैं, चाहे वह उम्र भर इस दंश को झेलती रहे। रतन भी गबन की एक ऐसी ही पात्र है गरीबी के कारण माता–पिता द्वारा एक अमीर वृद्ध को ब्याह दी जाती है। जहाँ रतन को पैसों की कोई कमी नहीं होती किन्तु नहीं है तो पति का प्यार, वह सुख जो एक पत्नी अपने पति से चाहती है। रतन अपने पति वकील इंद्रभूषण में सदैव एक पिता की सी छवि देखती है, पति का भाव उसे कभी नजर नहीं आता।

अतः जीवन के एकान्त को दूर करने, अपना मन बहलाने के लिए वह अपने घर पर लोगों को आमंत्रित करती है, बच्चों को बुलावा भेजती है। इन सबके बावजूद उसके जीवन की रिक्तता भर नहीं पाती है। ये कैसी परंपरा है कि पुरूष चाहे जितने विवाह कर सकता है। जिस आयु की कन्या से चाहे जब विवाह कर सकता है यहाँ तक कि वृद्धावस्था में किसी षोडशी को अपनी अर्द्धांगिनी बना सकता है फिर यह अधिकार किसी स्त्री को क्यों नहीं .....? यह समस्या प्रेमचंद ने गबन के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत की है। पूंजीवादी समाज में जिस प्रकार धन के बल पर व्यक्ति कुछ भी कर सकता है उसी प्रकार पुरूष प्रधान समाज में पुरूष स्वयं अनुपयुक्त होते हुए भी किसी कुमारी कन्या का विवाह के नाम पर जीवन बरबाद कर सकता है। रतन के साथ यही त्रासदी घटी वह एक धनी किन्तु वृद्ध वकील की पत्नी है। रतन एक नवविकसित यौवना है तो उसका पति इन्द्रभूषण न केवल वृद्ध है वरन् उसकी

यौवनागत इच्छाओं की पूर्ति करने में भी अक्षम हैं। दोनों में जो प्राकृतिक विभेद था उसे न तो वकील साहब पाट सकते हैं न ही रतन। यह समस्या आज भी समाज में व्याप्त है।

1.3.5 पुलिस के वंचनापूर्ण हथकण्डों की समस्या

आज हमारे देश में राजनेता और पुलिस ये दोनों ही सबसे अधिक व्यंग्य के पात्र बने हुए है। कारण पुलिस के हथकंडे जग जाहिर है। इस समस्या से सारा देश त्रस्त है। आज कोई भी सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति पुलिस से दूरी बनाए रखने में ही अपनी सुरक्षा समझता है। कहीं उनकी वजह से वे किसी मुसिबत में न फंस जाए। ऐसी कई घटनाएं समाज में देखने को मिलती हैं कि सच्चे और अच्छे रास्ते पर चलने वाले लोग पुलिस की प्रवंचनापूर्ण हथकंड़ों की समस्या के माध्यम से उजागर किया है।

पुलिस जब सच्चे अपराधी की खोज न कर किसी मुखबिर से झूठी गवाही दिलवाकर निरापराध लोगों को फंसवा देती है तो उस समय क्रांतिकारियों को डकैती के केस में फंसाने के लिए पुलिस क्या करती होगी। आज भी समाचार पत्रों में कई बार पढ़ने को मिलता है कि घूंसखोरी, चोरी, डकैती, बलात्कार, गबन के अपराधी खुले आम घूमते रहे हैं और कोई लाचार, बेबस, निरापराध को मुजरिम करार कर उसका एनकाउण्टर कर दिया जाता है अथवा उसे जेल के पीछे सड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है।

गबन उपन्यास में भी कुछ क्रांतिकारियों को डकैती का आरोप लगाकर पुलिस किस प्रकार रमानाथ का उसका मुखबिर बनाने का षड़यंत्र करती है। रमानाथ को कुछ धन का लोभ देकर तथा गबन के आरोप से मुक्त करवा देने का प्रलोभन दे अपने कब्जे में कर लेती हैं पुलिस के ये हथकंडे मात्र उस युग की समस्या नहीं है वरन् वर्तमान में देश इस तरह की समस्या से बेहद परेशान है। आम इंसान की नजरों में पुलिस की छवि बिगड़ती जा रही है, इससे भी बड़ी चिंता का विषय है कि जब रक्षक ही भक्षक बन जाए तो देश न्याय की गुहार कहाँ लगाए... ?

1.3.6. उधार की समस्या

'उधार लेकर घी पीना' एक प्राचीन कहावत है। मिथ्या प्रदर्शन की भावना से मध्यवर्गीय समाज, अपना झूठा आत्मप्रदर्शन करने हेतु अपनी कामनाएं बढ़ा लेते हैं और जब उन्हें अपनी आमदनी से पूरा नहीं कर पाते हैं तो उधार लेना आरंभ कर लेते हैं। जब पैर चादर से बाहर निकल जाते है और व्यक्ति अपने आत्मगौरव की लालसा छोड़ नहीं पाता ऐसे में वह कर्ज के बोझ तले दबता जाता हैं। प्रेमचंद का चिंतन है कि, कर्ज का यह रोग मेरे देश को जाने कैसे लग गया, यह चक्र पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। गबन में पहले तो दयानाथ रमानाथ के विवाह में गहने उधार लेकर बनवाते हैं, जिसका कर्ज चुकाने के लिए रमानाथ को जालपा के गहने चुराने पड़ते हैं। गहने खो जाने पर जालपा और रमानाथ के रिश्तों के बीच काफी दूरियाँ आ जाती है।

किन्तु रमानाथ इस घटना से भी कोई सबक नहीं लेता और नौकरी के दौरान जालपा के लिए उधार गहने खरीद लेता है और जब उधार नहीं चुका पता है तो सरकारी रूपयों का गबन कर लेता है। प्रस्तुत उपन्यास का मूल ही उधार की समस्या से उपजी समस्याएं हैं इसीलिए प्रेमचंद ने उपन्यास का शीर्षक 'गबन' रखा है। जिसके पीछे प्रेमचंद का उद्देश्य समाज को यह संदेश देना है कि व्यक्ति को अपनी आमदनी के अनुसार अपनी आवश्यकताओं को नियंत्रित करना

चाहिए। अन्यथा एक बार यदि यह रोग व्यक्ति को लग गया तो वह जीवन में निरंतर किसी न किसी समस्याओं से घिरा रहता है।

आज देश में कितने ही परिवार ऐसे हैं जिन्होंने उधार के चक्कर में पड़कर अपने को एवं अपने परिवार को मुसीबत में डाल देते है, फिर पीढ़ी दर पीढ़ी उस ऋण के बोझ तले दबे रहते हैं।

1.3.7 वेश्या जीवन की समस्या –

वेश्या समाज की ऐसी पात्र है जिसे समाज बाजार कहकर उपेक्षित करता हैं सोचता है प्यार मोहब्बत उसके लिए केवल खेलने की चीज है, उसे कभी किसी से सच्ची सहानुभूति नहीं हो सकती वह केवल वासना तृप्ति का साधन मात्र है। समाज की इस सोच के कारण उनका जीवन निरंतर पतन की ओर बढ़ता जा रहा है।

गबन उपन्यास में गबन की घटना के साथ–साथ अन्य कई घटनाएं चलती है जिनमें एक घटना जिसकी पात्र है जोहरा। जोहरा एक वेश्या है। वह भी आम लोगों की ही तरह एक इंसान है उसे भी समाज में जीने के अधिकार है। वह भी एक शांतिप्रिय व सम्मान जनक जीवन जीने की अभिलाषा रखती है। उसे भी जीवन में किसी से सच्चा प्यार हो सकता है। गबन का आरोपी होकर रमानाथ जब कलकत्ता पहुँचता है तो उसकी मुलाकात जोहरा से होती है और जोहरा को जब इस बात का एहसास होता है कि रामनाथ का उसके प्रति प्रेम सच्चा है तो एक सहज नारी सुलभ भावना उसके भीतर जागती है जिससे वह रमानाथ की ओर आकर्षित हो जाती है। वहीं जालपा के चरित्र की महत्ता को देखकर उसके मन पर और भी गंभीर तथा पवित्र प्रभाव पड़ता है। तब वह तय करती है कि इस पाप के जीवन को त्यागकर पवित्र जीवन व्यतीत करेगी। इसी विचार से वह जालपा और रमानाथ के साथ इलाहाबाद लौट आती है और बाढ़ में डूबती हुई एक स्त्री का बचाने के प्रयास में अपने आपको बलिदान कर देती है।

प्रेमचंदजी इस घटना के माध्यम से वैश्याओं के जीवन के उज्जवल पक्ष से समाज को रूबरू कराना चाहते हैं ताकि उनके प्रति लोगों की सोच बदले और उनका उद्धार हो सके। क्योंकि कई ऐसी स्त्रियाँ है जो धोखे से इस देह व्यापार की खाई में धकेल दी जाती हैं और जब वे किसी तरह बाहर निकलने का प्रयास करती हैं तो पहले तो कोई उनकी सहायता के लिए सामने नहीं आता यदि किसी तरह वे इस प्रयास में सफल भी हो जाती हैं तो समाज उन्हें यही एहसास कराता है कि देह मंडी ही उनका एक मात्र स्थान है इसके अतिरिक्त उनके लिए समाज में कोई स्थान नहीं हैं।

1.3. 8. संयुक्त परिवार की समस्या

विश्व में भारतीय समाज जो अपनी पृथ्कता रखता है उनमें उसके संयुक्त परिवार का स्वरूप भी एक प्राथमिक विशेषता हैं बरसों से हमारे परिवार कई पीढ़ियो तक संयुक्त रूप से रह रहे है आज भी यह विशेषता काफी परिवारों में देखने को मिलती है। जहां दो बर्तन होते है वहां टकराहट होती है ये प्राचीन कहावत है, किन्तु एक सिक्के के दो पहलू की तरह इसके कुछ लाभ हैं तो कुछ समस्याएं भी है। प्रेमचंद ने इन दोनों पहलूओं का गबन के माध्यम से उभारा है। साथ ही इसमें मध्यम और उच्चवर्ग दोनों के ही संयुक्त परिवार की झलक देखने को मिलती हैं जालपा आरंभ में अपने ससुराल वालों के साथ कटु व्यवहार करती है जिसके वे भी

उसकी उपेक्षा करते हैं। किन्तु रमानाथ के चले जाने पर जब जालपा दुख और अवसाद से घिर जाती है तो वही ससुराल वाले उसके प्रति सहानुभूति दिखलाते हैं यह संयुक्त परिवार का एक लाभ है। इस माध्यम से लेखक यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि संयुक्त परिवार में जीवन तभी सुखपूर्वक रहा पाता है है जब परिवार के सदस्य सामंजस्य, सहानुभूति और विश्वास बनाए रखते हैं।

1.3.9. स्त्री स्वाधीनता की समस्या –

प्राचीन भारतीय समाज में यह उक्ति कही जाती थी 'यत्र पूजयन्ते नारी, रमयन्ते तत्र देवताः' यह सच भी है कि प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों का विशेष आदर और सम्मान होता था। किन्तु मध्यकाल से उसकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होने लगा। नारी घर की चार दीवारी में कैद होकर रह गई, धीरे–धीरे उसके सारे अधिकार छिन गये, उन्हें शिक्षा के अधिकार से भी वंचित कर दिया गया। आधुनिक काल के आरंभ तक यही स्थिति रही। जालपा, रतन आदि इसी दौर से गुजरती है। रमानाथ के बेरोजागार होने तक जालपा की भी यही स्थिति थी वहीं वकील साहब की मृत्यु के बाद रतन की स्वाधीनता भी कैद होकर रह जाती है।

प्रस्तुत समस्या के माध्यम से प्रेमचंद यह दर्शाना चाहते हैं कि किसी भी समाज के विकास में नारी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। अतः परिवार और समाज के विकास में नारी स्वतंत्रता का विशेष महत्व होता है।

उपरोक्त विवेचना के आधार पर हम कह सकते हैं कि गबन एक समस्या प्रधान उपन्यास है जिसमें प्रेमचंद ने परिवार, समाज, राजनीति एवं देश के समस्त पहलूओं की समस्याओं से समाज को अवगत कराया है। प्रमुख बात यह है कि इतने वर्षों के उपरांत आज भी इन समस्या का स्वरूप समाज में व्याप्त है यथा नारी का आभूषण के प्रति मोह, मध्यम वर्ग का उच्चवर्ग के साथ बराबरी कर झूठा आत्म प्रदर्शनिकभाव, उधार लेकर समाज में अपनी आत्म प्रतिष्ठा साबित करने की लालसा, समाज में नारी के प्रति दोयम दर्जे का भाव विधवा और वेश्याओं के प्रति समाज एवं सुरक्षा विभाग के षडयंत्र एवं कूटनीतियाँ आदि आज भी समाज में जारी है अतः जाहिर है प्रेमचंदका उपन्यास गबन कालजयी रचना है, आज भी गबन इसकी सार्थकता सिद्ध होती है।

गबन की व्याख्या–

1. जब तक गले में जुआ नहीं पड़ा है, तभी तक यह कुलेंले हैं। निकम्मों को राह पर लाने का इससे बढ़कर और कोई उपाय नहीं।'

संदर्भ– प्रस्तुत गद्य प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास गबन से लिया गया है।

प्रसंग– प्रस्तुत उपन्यास का नायक रमानाथ जो कि युवा होने के साथ दायित्वों से दूर भागता है। उसके व्यवहार से उसके माता–पिता दोनों बहुत दुखी हैं। ऐसे में रमानाथ की माँ उन्हें अपने पुत्र को सही रास्ते पर लाने के लिए विवाह करने की सलाह देती है। प्रस्तुत पंक्तियाँ उस समय के संवाद को व्यक्त करती हैं।

व्याख्या– जागेश्वरी और दयानाथ का परिवार एक मध्यम वर्गीय परिवार है ऐसे में युवा पुत्र पिता का दाया हाथ कहा जाता है किन्तु रमानाथ जो कि कथा का नायक है किन्तु अपने दायित्वों के प्रति उदासीन है। सारा समय सैर करना, शतरंज खेलना, मित्रों से कपड़े और बाइक उधार लेकर लोगों में रोब जमाना उसका शौक है । ऐसे में एक पिता की चिंता को देखकर माँ यह सुझाव देती है कि उसका विवाह कर देने से संभव है उसे जिम्मेदारी का एहसास हो जाए। विवाह होने से उसे पैसे कमाने की फिक्र होगी, पत्नी की जिम्मेदारी उसे जिन्दगी के प्रति गंभीर बनाएगी। वह सैर सपाटा करना , दिन भर कुलेंले करना सब भूल जाएगा। ऐसे निकम्मों को राह पर लाने का एक यही रास्ता है।

विशेष– प्रस्तुत संदर्भ में लेखक ने एक युवा किन्तु गैर जिम्मेदार पुत्र के पिता की पीडा एवं विवाह को जिम्मेदार होने का मूल मंत्र बताने का प्रयास किया है।

2. लज्जा ने सदैव वीरों को परास्त किया है । जो काल से नहीं डरते, वे भी लज्जा के सामने खड़े होने की हिम्म्त नहीं करते। आग में कूछ जाना, तलवार के सामने खड़ा हो जाना, उसकी अपेक्षा कहीं सहज है। लाज की रक्षा ही के लिए बड़े–बड़े राज्य मिट गये हैं, रक्त की नदियाँ बह गई हैं, प्राणों की होली खेल डाली गई हैं।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्य प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास गबन से लिया गया है।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्य में उस समय की घटना का वर्णन लेखक ने किया है जब रमानाथ ने देशभक्त के लिए झूठी गवाही दी और जालपा ने उसे धिक्कारा। तब वह जज साहब के सामने जाकर अपना जुर्म कुबूल कर पुलिस का भंडाफोड़ कर देना चाहता है ओर इस इरादे से वहाँ जाता भी है किन्तु अपने किए गुनाह की ग्लानि उसे जज साहब के सामने जाने से रोकती है। वह लज्जावश जज साहब के सामने जाने का साहस नहीं जा पाता। लेखक ने इसी प्रसंग में लज्जा को वर्णित किया है।

भावार्थ– लज्जा इंसान का आवरण है। इसी लज्जा की रक्षा हेतु के लिए कई देश आपस में भिड़ गए, अपने लज्जा की रक्षा हेतु कई वीरांगनाओं ने उत्सर्ग किया। यही लज्जा आज रमानाथ के हिस्से आई है अपनी झूठी गवाही में कई लोगों को फसाने के बाद जब उसे अपनी गलती का एहसास होता है तो वह जज के सामने अपने गुनाह को कुबूल करना चाहता है , वह निश्चय कर लेता है कि वह जज साहब को सब साफ–साफ बता देगा कि वह केसे पुलिस के चंगुल में फंसा और उनके कहने पर झूठी गवाही देने पर विवश हुआ। किन्तु इतना सब सोचने के बाद भी जब वह जज साहब की कोठी पर पहुँचता है तो लज्जा उसके आड़े आ जाती है । उसे लगता है कि कैसे वह जज साहब के सामने कहेगा कि उसने यह सब मजबूरी में किया। लेखक कहते हैं लज्जा ने सदा वीरों को परास्त किया है इतिहास गवाह है कि लाज के कारण ही कई युद्ध हुए, खून की नदियाँ बही,जानों से होली खेली गई। इसी लज्जा ने आज रमानाथ को भी जज साहब के सामने जाने से रोक दिया। उसे जज साहब के सामने जाने से बेहतर जेल जाना लगा।

विशेष– प्रस्तुत गद्य में लेखक ने लज्जा के महत्व को प्रतिपादित किया है । व्यक्ति चाहे कितनी ही गलतियाँ क्यों न कर ले किन्तु लाज के सामने एक दिन वह परास्त हो ही जाता है।

3. रूदन में कितना उल्लास, कितन शांति, कितना बल है। जो कभी एकांत में बैठकर किसी की स्मृति, किसी के वियोग में सिसक-सिसककर और बिलख-बिलखकर नहीं रोया, वह जीवन के ऐसे सुख से वंचित है जिस पर सैंकड़ों हँसियां न्यौछावर है। हँसी के बाद मन खिन्न हो जाता है, आत्मा क्षुब्ध हो जाती है। रूदन के पश्चातएक नवीन स्फूर्ति, एक नवीन जीवन, एक नवीन उत्साह का अनुभव होता है।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्य प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास गबन से लिया गया है।

प्रसंग- हँसी और रूदन दोनों ही जीवन की महत्वपूर्ण अवस्थाएं हैं, किन्तु प्रायः हम रूदन को तिरस्कृत कर हँसी को महत्व देते हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने रूदन के महत्व को दर्शाते हुए कहा है कि हँसी के बाद जहाँ मन खिन्न हो जाता है वही रूदन के बाद मन का बोझ उतर सा जाता है। और एक स्फूर्ति मन में आती है।

भावार्थ- प्रेमचंद का संपूर्ण लेखन आदर्श और यथार्थवाद से ओत-प्रोत रहा है। प्रस्तुत पक्तियों के माध्यम से लेखक ने जीवन के दार्शनिक भाव को उजागर किया है। भौतिक संसार में जीने वाले लोग हम सदा जीवन में हँसते रहना चाहते हैं, और रूदन से दूर भागते हैं। लेखक ने यहाँ रूदन के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि रूदन में स्फूर्ति है इसके बाद मानव में उल्लास हो आता है, मन को एक प्रकार की शांति मिलती है। और इस अनुभव को केवल वही व्यक्ति समझ सकता है जो कभी जीवन में एकांत में बैठकर रोया हो तभी उसे यह तृप्ति का एहसास हो सकता है अन्यथा व्यक्ति जीवन क`बड़े सुख से वंचित रहा है। क्योंकि कहावत है-'हांसी का घर खासी, खांसी का घर रोग' अधिक हँसने से दिल भारी हो जाता है आँखों से आँसू आने लगते हैं वहीं रूदन के बाद लगता है मन पर पड़ा कोहरे का बोझ उतर गया है। और जीवन को एक नई स्फूर्ति एक नया आनंद मिला है।

विशेष- लेखक ने जीवन के यथार्थ को उजागर कर सुख और दुख दोनों के ही महत्व को प्रतिपादित किया है।

4. यह विशुद्ध उल्लास न था, इसमें एक शंका का समावेश था। यह उस बालक का आनंद न था, जिसने माता से पैसे मांगकर मिठाई नी हो बल्कि उस बालक का जिसने पैसे चुराकर ली हो। उसे मिठाइयां तो मिली परन्तु दिल कांपता रहता है कि कहीं घर चलने पर मार न पड़ने लगे।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्य प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास गबन से लिया गया है।

प्रसंग- प्रेमचंद का साहित्य उनके व्यक्तित्व की ही तरह आदर्श का अनुगमन करता है। उनके अनुसार आभूषण पर अनावश्यक व्यय करना भारत जैसे देश के लिए सार्थक नहीं है। जहाँ असंख्य लोग दो जून रोटी और कई हाथ रोजगार को तरसते हों वहाँ पैसों की आवश्यकता रोजगार खड़े करने में है। किन्तु कथा की नायिका का जेवर के प्रति मोह रमानाथ को विवश कर देता है और वह अपनी पत्नी को खुश करने हेतु उधार जेवर लेकर आता है किन्तु आमदनी उतनी न होने से वह मन में भयभीत भी है । एक तरफ पत्नी को खुश देखने का मोह दूसरी ओर उधार गहने खरीदने का भय, जिसकी तुलना लेखक ने एक ऐसे बच्चे से की है ।

भावार्थ– रमानाथ जिसके गले माता–पिता ने विवाह का जुँआ बांध दिया इसी जुएं के कारण आज रमानाथ अपनी पत्नी जालपा जो विवाह में चंद्रहार न आने पर कुपित है को खुश करने हेतु अपनी हैसियत से ज्यादा पैसे खर्च कर उसे गंगू सर्राफ से एक हार और शीशफूल कर्ज पर लेकर आता है। किन्तु पत्नी को यह ताहफा देते समय उसके मन में वह खुशी नहीं है जो होना चाहिए था उसमें कहीं भय मिला था। उसकी स्थिति ठीक ऐसी थी जैसे एक बालक जो चोरी से पैसे ले जाकर मिठाई खाता है । ऐसे में उसे मिठाई मीठी तो लगती है किन्तु उसकी मिठास का सुख वह पूरी तरह नहीं उठा पाता। इसमें वह आनंद नहीं जो माँ से पैसे लेकर वह मिठाई खाता। संभवतः माँ के देखने पर पिटाई का भय इसमें शामिल है। वह इस आनंद को खुलकर नहीं जी पाता उसी प्रकार रमानाथ के सामने एक और पत्नी के जेवर पाने पर खुशी से झूमता चेहरा दिखाई देता है दूसरे पल उधार लिए गहनों का कर्ज न चुका पाने से होने वाली रूसवाई का भय उसे खुलकर उत्साहित नहीं होने देता।

विशेष– प्रेमचंद ने ग्लानि के भाव को उजागर किया है व्यक्ति की मानवीयता है कि यदि वह कोई गलती करता है तो वह संसार से चाहे भाग ले किन्तु स्वयं से नहीं भाग सकता।

5. वह लालसा जो आज सात वर्ष हुए उसके हृदय में अंकुरित हुई थी, जो इस समय पुष्प और पल्लव से लदी खड़ी थी, उस पर वज्राघात हो गया। आज ही के दिन पर तो उसकी समस्त आशाएं अवलंबित थीं। दुर्देव ने आज वह अवलंब भी छीन लिया।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्य प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास गबन से लिया गया है।
प्रसंग– प्रस्तुत गद्य में लेखक ने जालपा के माध्यम से नारी के मनोविज्ञान का सुंदर चित्रण किया है। नारी मन कोमल होता है बचपन से जो झवि उसके भीतर घर कर लेती है उसकी आकृति लंबे समय तक उसके मन–मस्तिष्क में समा जाती है। जालपा का बचपन भी गहनों के बीच व्यतीत हुआ है अतः उनके प्रति उसका मोह होना स्वाभाविक है। वह गहनों को ही अपने वैवाहिक जीवन की आत्मप्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेती है। और विवाह में चंद्रहार न मिलने पर उसे जीवन ही व्यर्थ लगने लगता है विवाह की सारी परंपराएं उसे बेमानी लगने लगती है।
भावार्थ– जालपा जिसका बचपन खिलौने के बजाय गहनों के साथ खेलते बीता, बचपन में दादी उसे खिलौने के बजाय गहने उपहार में देती। माँ के पास चंद्रहार देखकर उसने माँ से जब वैसा ही चंद्रहार लेने की जिद की तो माँ ने उसे यह कहकर बहला दिया कि यह जेवर विवाह पर ससुराल से आता है बस फिर क्या था जालपा ने तभी से उस दिन की बाट जोहना आरंभ कर दिया। किन्तु विवाह में जब गहनों की पेटी आई तो जालपा की नजर बेसब्री से चंद्रहार को खोज रही थी जब उसे पता चला कि गहनों में चंद्रहार नहीं आया तो मानो विवाह का सारा उत्साह जाता रहा।एसकी दशा उस हरियाए पौधे की तरह हो गई जिस पर अचानक बड़ा बोझ ड़ाल दिया हो। मानो उसके सारे सपने ध्वस्त हो गए। उसे लगता है कि अभी वह सारे गहने उठाकर बाहर फैंक दे। किन्तु लोक लाज के भय से वह ऐसा नहीं कर पाती। और अंदर जाकर शिव की प्रतिमा को उठाकर फैंक देती है। उसकी आशा और सपनों की तरह मूर्ति भी टूटकर चूर–चूर हो जाती है। बस वह तभी से यह निर्णय कर लेती है कि आज के बाद वह कोई गहने धारण नहीं करेगी। मन को समझाते हुए कहती है जो सुंदर न होउसे गहनों की आवश्यकता है मैं तो वैसे ही काफी सुंदर हूँ मुझे गहनों की क्या जरूरत.... ?
विशेष– प्रेमचंद ने नारी मनोविज्ञान का सुंदर चित्रण किया है। नारी की आभूषण प्रियता और लालसा पूरी न होने पर उसका कोप स्वयं अपने पर उतारना नारी का सहज स्वभाव रहा है।